MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

December 2018
Issue-29, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

26	डॉ. भास्कर उमराव भवर	समकालीन हिंदी गजलः विविध विमर्श	72
27	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	सामाजिक प्रतिबद्धता की पुरजोर हिमायत : समकालीन हिंदी ग़ज़ल	74
28	डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने,	डॉ. सुमन जैन की ग़ज़लों में व्यक्त नारी संवेदना"	77
29	डॉ. बबन चौरे	दुष्यंतकुमार की गजलों में राजनीतिक विमर्श	80
30	डॉ. दीपक रामा तुपे	माँ की तलाश करती मुनव्वर राना की ग़ज़ल	82
31	डॉ. गायकवाड हनुमंत येदू	निदा फजली और दुष्यंतकुमार की हिंदी गजलों में सामाजिक विमर्श	84
32	डॉ. जगदीश बन्सीलाल चव्हाण	हिंदी गजलकारों की गजलों में सामाजिक अभिव्यक्ति	86
33	डॉ.जयराम श्री. सूर्यवंशी	समकालीन हिंदी गजल : महानगरीय एवं देहाती चेतना	88
34	डॉ. मिलिंद सालवे	समकालीन गजलों में राष्ट्रीय एकता के रंग	90
35	डॉ. संतोष मोटवानी	हिन्दी गजल का विकास	94
36	निवृत्ती शेषेराव भेंडेकर	21 वीं सदी की हिन्दी ग़ज़ल में राजनीतिक चेतना	97
37	प्रा.डॉ. पी. आर.गवळी	ओमप्रकाश यती की ग़ज़लों में संवेदना के विविध आयाम	99
38	डॉ.पंडित बन्न	दुष्यंतकुमार के गजलों में सामाजिक संवेदना	103
39	प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों में वेदना और निराशा के स्वर	105
40	प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील प्रा. मच्छिंद्र गुलाब ठाकरे	'जहीर कुरेशी की गजलो में राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श'	107
41	डॉ पूनम त्रिवेदी	देवेन्द्री मन्द्रवाल अफ़शाँ की ग़ज़लों में यथार्थवादी चिंतन	109
42	डॉ. आर. के. जाधव	इक्कीसवीं सदी की हिंदी–ग़ज़लों में विविध विमर्श	111
43	प्रा डॉ राजेंद्र रोटे	दुष्यन्तकुमार के ग़ज़लों में राजनीतिक विमर्श"	113
44	डॉ. रेखी अमरजा अजित	हिंदी गजल मे अन्यान्य विमर्श : नैतिक जीवन – मूल्य	115
45	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	चंद्रसेन विराट की गज़लों में चित्रित आम आदमी ('बोल, मेरी जिन्दगी!' के संदर्भ में)	117
46	प्रा. डॉ. संजय चोपडे	"सुरेश भट के गजलों में सामाजिक पक्ष"	119
47	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	हिंदी ग़ज़ल में स्त्री विमर्श : सुवर्णा परतानी की ग़ज़लों के संदर्भ में	122
48	प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों में सामाजिकता	124
49	आमलापुरे सूर्यकांत विष्वनाथ	21 वी सदी की हिंदी गजलों में सामाजिक विमश	127
50	डॉ.वैशाली शिंदे,	21 वीं सदी के हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक विमर्श	130
51	डॉ. विजय एकनाथ सोनज	रामकुमार कृषक की ग़ज़लों में सामाजिक बोध	132
52	प्रा. शेख जाकीर एस	समकालीन हिन्दी गजलों में व्यक्त राजनीतिक बोध	135

Scanned by CamScanner

माँ की तलाश करती मुनव्वर राना की ग़ज़ल

डॉ. दीपक रामा तुपे

ग़ज़ल मूलतः फरसी काव्य विधा है। फारसी से उर्दू में आई ग़ज़ल का अर्थ प्रेमी–प्रेमिका का वार्तालाप माना जाता है। प्रारंभिक काल में ग़ज़ल प्रेम की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम थी, मगर समय के साथ उसमें अन्य विषय भी जुड़ गए। आज हिंदी ग़ज़ल ने अपनी स्वतंत्र पहचान बना ली है। हिंदी ग़ज़ल को उन्नति की चरमसीमा तक पहुँचाने में इक्कीसवीं सदी के मुनव्वर राना, नीजा फाजली, नसीम निखत, राहत इंदौरी, अनामिका अंबर–जैन, कुमार विश्वास आदि प्रसिद्ध ग़ज़लकारों का योगदान सराहनीय रहा है। इनमें से मुनव्वर राना ही है, जिन्होंने हिंदी ग़ज़ल को कोठे से माँ तक घसीट लाया और विशेष पहचान दिलाई। उसके पहले ग़ज़ल में सबकुछ था; जैसे माशूक, महबूब, हुस्न, साकी, सब तरक्की, पसंद अदब और बगावत आदि। पर माँ नहीं थी। इस संदर्भ में ग़ज़लकार मुनव्वर राना लिखते हैं–

"मामूली एक कलम से कहाँ तक घसीट लाए।/हम इस ग़ज़ल को कोठे से माँ तक घसीट लाए।।"[1]

शब्दकोशों के मुताबिक ग़ज़ल का मतलब महबूब से बातें करना है। इसे अगर सच भी मान लिया जाए तो मुनव्वर राना सवाल उठाते हैं कि महबूब माँ क्यों नहीं हो सकती? ग़ज़ल का अर्थ अगर महबूब के हुस्न, जिस्म, शबाब, रूख, रूखसार, होंठ, जोबन, कमर की पैदाइश का वर्णन करना है तो उसे ऐयशी कहा जाना चाहिए। माना जाता है कि उनकी कलम में खुद माँ वास करती है। उनकी कलम तो बस माँ के प्यार के लिए बनी हुई है। मुनव्वर राना द्वारा लिखित 'माँ' नामक ग़ज़ल संग्रह पूरे विश्व में मशहूर है। हमेशा माँ के पर के नाम से जाने जाने वाले मुनव्वर राना का लेखन कार्य बेजोड़ है। उन्होंने ग़ज़ल को माँ से संबोधित किया; न कि माँ से बल्कि औरत के अन्यान्य बहन और बेटी रूप से भी संबोधित किया। वरना पहले ग़ज़ल का मतलब महबूबा की खूबसूरती का वर्णन करना ही तो था, लेकिन मनुव्वर राना ने उसे माँ के प्रेम से जोड़ दिया, जो दुनिया में बेजोड़ है। माँ के बारे में कहा जाता है कि भगवान हर पल बेटे के साथ नहीं रह सकता, इसलिए उसने माँ को बनाया, जिससे वह बड़ी भारी रक्षा करती रहती है। माँ की इसी खूबसूरती का वर्णन करते हुए मुनव्वर राना अपनी ग़ज़ल 'माँ' इस तरह से करते हैं–

"ऐ अँधेरे! देख ले मुँह तेरा काला हो गया।/ ने आँखे खोल दी घर में उजाला हो गया।।"[2]

स्पष्ट है कि वे अंधेरे को चुनौती देते हैं और माँ की आँखें खोलते की तुलना सूर्य के उदीयमान होने से करते हैं। मानो माँ ने ही आँखे खोल देने से घर में उजाला हो गया है। यहाँ माँ अपनी संतान के लिए सूर्य का प्रतीक होती है। माँ जब गुस्से में होती है तो वह रो देती है। वह इतना रोती है कि अपने बेटे के गुनाहों को धो देती है। माँ की ममता का मूल्य चुकाना तो जन्म–जन्मांतर तक कठिन है। माँ से बेइंतहाँ मुहब्बत करने वाले मुनव्वर राना कहते हैं–अगर मैं अपनी शायरी से एक भी माँ ओल्ड एज होम से घर वापस ला सकूँ तो मेरी शायरी कामयाब हो गई। यही बात वे 'माँ' ग़ज़ल में लिखते हैं–

"इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है।/माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।।"[3]

स्पष्ट है कि मुनव्वर राना शायरी किसी माशूका के लिए नहीं लिखी, उसने तो माँ से ही इश्क किया और उसी पर अपनी शायरी न्योछावर की। उनकी शायरी बस माँ से शुरू होती है और माँ तक खत्म होती है। हर किसी के घर में बँटवारा होता है। यह बँटवारा इतना भयावह होता है कि लोग कभी–कभार माता–पिता को भी बाँट देते हैं। मुनव्वर राना बँटवारें की बात भी ग़ज़ल 'माँ' के माध्यम से माँ के साथ जोड़ देते हैं। स्वयं उन्हीं के शब्दों में–

"किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकाँ आई।/मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में माँ आई।।"[4]

स्पष्ट है कि बँटवारे में अन्यान्य संपत्ति मायने नहीं रखती जबकि माँ मायने रखती है, इसलिए ग़ज़लकार अपने छोटे होने की फायदा उठाते हुए अपने हिस्से में माँ आने की बात करते हैं। माँ हमेशा अपने बेटे का साया बन जाती है। वह अपने बेटे की शक्ति बनकर सुरक्षा करती है। बेटे को भी घर पर माँ होने का एक सुरक्षित एहसास होता है। इतना ही नहीं, यदि माँ घर पर है तो उसकी दुआँ भी बेटे के साथ रहती है। ग़ज़लकार मुनव्वर राना 'माँ' नामक ग़ज़ल के एक शेर में इन्हीं स्थितियों का एहसास दिलाते हैं–

"अभी जिंदा है माँ मेरी मुझे कुछ भी नहीं होगा।/मैं जब घर से निकलता हूँ दुआँ भी साथ चलती है।।"[5]

स्पष्ट है कि माँ की ताकत भगवान की ताकत के बराबर होती है। इसलिए माँ की दुआँ बेटे को कुछ नहीं होने का एहसास देती है। इतना ही नहीं, भगवान के समान वह दुआँ भी बेटे के साथ चलकर सुरक्षा का एहसास देती है। दुनिया में कई रिश्ते–नाते स्वार्थ की नींव पर टिके हुए हैं। जहाँ स्वार्थसिद्धि नहीं होती वही वे बद्दुआं देते हैं और नाराज भी। अगर दुनिया में एक ही रिश्ता ऐसा है; जो न कभी अपना स्वार्थ देखता है और न कभी खफा होता है और वह रिश्ता है माँ–बेटे का रिश्ता मानव जीवन के इसी रिश्तों की पहल मुनव्वर राना की 'माँ' ग़ज़ल में लिखते हैं–

"लबों पे उसके कभी बद्दुआ नहीं होती।/ बस एक माँ है जो मुझसे खफा नहीं होती।"[6]

स्पष्ट है कि माँ अपने बेटे के लिए कभी बद्दुआ नहीं देती और न कभी नाराज होती है, जबकि वह हमेशा अपने बेटे का हित देखती है। कर्ज लेना और देना आम बात है। कर्ज के लेन–देन में हम सभी का कर्ज चुका सकते हैं, मगर एक ऐसा कर्ज होता है, जो जिंदगी भर चुका नहीं सकते। वह कर्ज होता है माँ के सजदे में रहने का। स्वयं मुनव्वर राना अपनी 'माँ' ग़ज़ल में लिखते हैं–

"मैं ऐसा कर्ज है जो मैं अदा कर ही नहीं सकता।/ मैं जब तक घर न लौटूं, मेरी माँ सजदे में रहती है।"[7]

Scanned by CamScanner

उक्त शेर से विदित होता है कि जब तक संतान घर पर सही–सलामत वापस नहीं आती, तब तक माँ सजदे में रहती है और माँ का ही कर्ज दुनिया की कोई संतान अदा कर नहीं सकती। सचमुच मनुष्य को मानव जन्म एक ही बार मिल जाता है और बचपन भी एक ही बार मिल जाता है। लेकिन कहा जाता है कि लोकोपकारी तथा सात्विक विचारों के व्यक्ति फरिश्ता बनकर याने देवदूत या देवता बनकर जन्म लेते हैं और अपनी ख्वाहिश पूरी करते हैं। ये देवदूत अपनी जिंदगी में एक ही ख्वाहिश रखते हैं और वह है माँ से लिपट जाने के लिए फिर से बच्चा हो जाने की। मुनव्वर राना 'माँ' नामक ग़ज़ल के एक शेर में फरिश्ते के रूप में बच्चा हो जाने की कामना करते हैं; जैसे–

"मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊँ।/माँ से इस तरह लिपट जाऊँ कि बच्चा हो जाऊँ।।"[8]

उक्त शेर में माँ का अपनी संतान के प्रति होने वाला अगाध प्रेम और मानव जीवन की इच्छा प्रकट होती है। माँ अपनी संतान की हर मुसीबत में साथ देती है। वह अपने बेटे की समस्या अपनी समस्या समझती है। हमेश जागना मानो उसकी अपनी किस्मत है। मुनव्वर राना की 'माँ' कविता इन्हीं स्थितियों का दस्तावेज देती है–

"वो तो लिखा के लाई है किस्मत में जागना। /माँ कैसे सो सकेगी कि बेटा सफर में है।।"[9]

स्पष्ट है कि माँ अपने बेटे की किसी भी समस्या की चिंता करती रहती है। वह हर वक्त अपने बेटे का ही खयाल करती रहती है। चाहे बेटा किसी सफर में जाए, अन्य किसी कार्य में। वह हमेशा अपने बेटे या संतान के बारे में सोचती रहती है। इसी सोच या खयाल की खातिर माँ की दुआएँ भी मीलों–मील जाती है। बेटा चाहे उससे कितना भी दूर चला जाए। यदि बेटा देश–विदेश जाने निकलता है तो माँ की दुआएँ बेटे की चिंता की खातिर विदेश भी पहुँच जाती है। इस संदर्भ में मुनव्वर राना 'माँ' कविता में लिखते हैं–

"दुआएँ माँ की पहुँचाने को मीलों मील जाती हैं।/कि जब परदेश जाने के लिए बेटा निकलता है।।"[10]

उक्त शेर से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती की बेटा देश में जाए या विदेश में, लेकिन माँ उसका खयाल हर वक्त करती रहती है। इतना ही नहीं; बेटा बड़ा होने पर कभी वह उसके साथ नहीं जाती तो उसकी दुआँ बेटे की हिफाज़त की खातिर परदेश में पहुँच जाती है। यदि देश–विदेश में अपना बेटा बर्बाद हो गया तभी माँ सभी को अपने बेटे सही–सलामत या मजे में होने की बात सबसे कह देती है। स्वयं मुनव्वर राना के शब्दों में–

"बरबाद कर दिया हमें परदेश ने मगर /माँ सबसे कह रही है कि बेटा मजे में है।"[11]

माँ दुनिया अपने बेटे को कितना भी बरबाद करें, लेकिन माँ अपने बेटे की बर्बादी के बारे में कभी नहीं सोचती; जबकि वह अपने बेटे की मजे होने की खबर सबदूर पहुँचती रहती है। इतना ही नहीं, वह बेटे के सिर के ऊपर खुली छत भी नहीं रहने देती। अगर कुछ नहीं होगा तो उसे अपने आँचल से छिपा देती है। स्वयं मुनव्वर राना अपनी 'माँ' ग़ज़ल में लिखते हैं–

"कुछ नहीं होगा तो आँचल में छुपा लेगी मुझे।/माँ कभी सर पे खुली छत नहीं रहने देगी।।"[12]

स्पष्ट है कि माँ अपने बेटे की हर मुसीबत से यानी बारिश, ठंडक या धूप से राहत दिलाने के लिए जब पास में कुछ नहीं होता तब आँचल से अपनी संतान का सिर ढक लेती है, मगर कभी भी सिर पे खुली छत नहीं रहने देती।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मुनव्वर राना की 'माँ' ग़ज़ल संग्रह में माँ की बेटे के प्रति होने वाली चिंता, अगाध प्रेम, खयालात, ख्वाहीश, चाहत और दुआँ आदि भावनाओं का बेबाक बयान प्रस्तुत किया है। माँ वास्तव में करुणा और दया की प्रतिमूर्ति होती है। मुनव्वर राना ने माँ को ग़ज़ल के माध्यम से मालामाल किया। उन्होंने ग़ज़ल को कोठे से माँ तक घसीट लाया। अंधकार को मिटाने की ताकत माँ की आँखों में होती है। वह बेटे के गुनाहों को माफ करती है यानी धो देती है। माँ हमेशा बेटे की फिक्र करती रहती है। यही वजह है कि वह अपने बेटे को कभी नाराज नहीं होने देती और न कभी उसे बद्दुआँ देती है बल्कि जब कभी बेटा घर से निकलता है तब दुआँ बेटे के साथ चलती है। इतना ही नहीं; घर से निकला हुआ बेटा वापस नहीं आता तब तक वह सजदे में रहती है। माँ का यही कर्ज आज तक दुनिया में कोई भी बेटा अदा नहीं कर सका और न ही करेगा।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. मुनव्वर राना–माँ, वाणी प्रकाशन, 4695, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ–60
2. वही, पृष्ठ–42
3. वही, पृष्ठ–42
4. वही, पृष्ठ–42
5. वही, पृष्ठ–42
6. वही, पृष्ठ–42
7. वही, पृष्ठ–44
8. वही, पृष्ठ–42
9. वही, पृष्ठ–50
10. वही, पृष्ठ–46
11. वही, पृष्ठ–46
12. वही, पृष्ठ–46

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज (स्वायत्त),
कोल्हापुर–416 003।
ई–मेल: dipaktupe1980@gmail.com
मोबाइल: 08805282610

Scanned by CamScanner